अनाथों की ट्रेन

ईव, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : विदूषक

अनाथों की ट्रेन

ईव, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : विदूषक

परिचय

1850 से 1920 तक करीब एक लाख बेघर बच्चों को अमरीका में, न्यू-यॉर्क स्टेशन से ट्रेन द्वारा पश्चिम के छोटे शहरों और फार्म्स पर भेजा गया. *चिल्ड्रेन ऐड सोसाइटी* के चार्ल्स लोरिंग ब्रेस इन अनाथ बच्चों के लिए अच्छी देखभाल करने वाले परिवार खोज रहे थे. ऐसे परिवार जो इन बच्चों को गोद लें और उनकी अच्छी परवरिश करें.

बहुत से बच्चे खुश रहे. कुछ दुखी भी रहे. कुछ एक प्रकार की तकलीफ से दूसरी परेशानी में फंसे. कई बच्चों को सुरक्षा और प्रेम भी मिला.

यह कहानी चौदह ऐसे अनाथ बच्चों की है जो पश्चिम गए और वहां उन्होंने एक बेहतर ज़िन्दगी जी. "अनाथों की ट्रेन" वाकई में असली है, पर उसमें शहरों के और बच्चों के नाम काल्पनिक हैं. कहानी के शहर लेखिका के ज़हन में उनकी कल्पना से उपजे हैं.

“यह हमारी ट्रेन है, मारिआन,” मिस रैन्डोल्फ ने कहा. फिर नोरा ने मेरा हाथ पकड़ा.

तभी प्लेटफार्म पर एक कंडक्टर आया और उसने पूछा, “मैडम, क्या यही वे अनाथ बच्चे हैं?”

मिस रैन्डोल्फ बिल्कुल सीधी खड़ी थीं. “हाँ, चौदह हैं.”

“हमने आपके लिए बिल्कुल अंत में एक विशेष बोगी लगाई है,” कंडक्टर ने कहा.

फिर बड़े लड़कों ने संदूक उठाए और लड़कियों ने छोटे-छोटे समान उठाए. मिस रैन्डोल्फ ने इमरजेंसी बैग अपने हाथ में लिया. पिछले हफ्ते उन्होंने इस बैग में तौलिये, दवाइयां और कुछ जड़ी-बूटियाँ रखीं जिससे बच्चों की जुओं को ठीक किया जा सके. सेंट क्रिस्टोफर अनाथालय के बच्चों के बालों में तो जुएँ नहीं होंगी. पर अन्य अनाथ गृहों से आए और सड़क के बच्चों के बालों में जुएँ हो सकती थीं.

“क्या तुम परिवार की तलाश में जा रही हो?” कंडक्टर ने नोरा से पूछा. “तुम बहुत अच्छी लग रही हो!”

“धन्यवाद,” नोरा ने जवाब दिया. नोरा अभी सिर्फ पांच साल की थी. पर सेंट क्रिस्टोफर में वो बच्चों को, शिष्टाचार सिखाते थे.

“तुम सौभाग्यशाली हो!” उसने मुझसे कहा. “मैंने सुना है कि पश्चिम में अभी भी बहुत से परिवार हैं जो बच्चों को गोद लेना चाहते हैं.”

“बिल्कुल ठीक,” मिस रैन्डोल्फ ने कहा.

“इस बार हम पिछले साल के मुकाबले कम लोगों से ही मिलेंगे,” कंडक्टर ने कहा. “1877 में, सबसे ज्यादा बच्चे गोद लिए गए थे.”

फिर हम ट्रेन में चढ़े.

ट्रेन की सीटें सख्त हैं. मैं नोरा को खिड़की के पास बैठने देती हूँ. खिड़की के गंदे कांच में मुझे सबकी परछाई दिखाई देती है. वो नीले रंग का एक कोट पहने है जिसमें चमकीले बटन हैं. उसके बाल घुंघराले हैं. मुझे अपना लम्बा, पतला चेहरा भी दिख रहा है. मैं सुन्दर नहीं हूँ. मुझे पता है कि नोरा को लोग पहले पसंद करेंगे.

"मारिआन?" उसने फिर से मेरा हाथ पकड़ा. "क्या वे यकीन करेंगे कि हम दोनों बहनें हैं? हम दोनों देखने में बिल्कुल अलग लगते हैं. अगर हमें अलग-अलग रखा जायेगा तो मुझे बहुत कष्ट होगा. तब हम नहीं जायेंगे..."

"चुप!" मैं फुसफुसाई.

पर मिस रैन्डोल्फ ने बात सुन ली. "यह क्या बात है?" उन्होंने पूछा. "बहनें होने का नाटक करने से काम नहीं चलेगा." फिर उन्होंने हल्की आवाज़ में कहा, "लड़कियों, सुनो. ज़्यादातर लोगों को सिर्फ एक बच्चे की ज़रुरत होगी. इसलिए एक-दूसरे का मौका खराब मत करो."

चलो ठीक है, मैंने खुद से कहा. फिर मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और एक मुलायम पंख को छुआ. *वो वहां होंगी. वो मुझे ज़रूर चाहेंगी.*

फिर ट्रेन चलना शुरू हुई. हमने तेज़ी से स्टेशन, यार्ड, झोपड़ियों, गोदामों को पार किया. कई घरों के बाहर धूप में कपड़े सूख रहे थे. फिर हम शहर के बाहर निकले और वहां सेब के तमाम पेड़ थे जिन पर सेब लटके थे. मुझे पता था की सेब पेड़ों पर उगते हैं पर यह नज़ारा मैंने पहली बार ही देखा था.

मिस रैन्डोल्फ ने मुझ से और एक अन्य लड़की से एक कम्बल उठाने को कहा जिससे लड़के, लड़कियों से अलग हो जाएँ. फिर उन्होंने एक संदूक खोला और हमें रात के सोने वाले कपड़े दिए. हमें कपड़े बदलने थे.

"हम नहीं चाहते कि पहले स्टॉप पर ही तुम्हारे कपड़े खराब लगें," उन्होंने कहा.

उन्होंने मेरे और जीन के लिए कम्बल उठाया. फिर हमने अपने नए कपड़ों को तह करके संदूक में वापिस रखा.

कुछ देर बाद हमने डबलरोटी और खीरे की सैंडविच बनाईं. मिस रैन्डोल्फ उन्हें अपने साथ लाई थीं. फिर हमने गाढ़ा दूध पिया. जब अँधेरा हुआ तब हम एक-दूसरे से सटकर बैठे-बैठे सो गए.

सारी रात रेलगाड़ी के पहिए आवाज़ करते रहे

क्लिकिटी-कलैक, क्लिकिटी-ली

मैं आ रही हूँ माँ, मेरे लिए रुको.

शिकागो में हमने ट्रेन से अपना सारा सामान नीचे उतारा और फिर ट्रेन बदली. फिर हमारी यात्रा दुबारा शुरू हुई.

न्यू-यॉर्क छोड़े हुए अब हमें एक दिन और एक रात बीत चुका था. अब बाहर घास को देखने के अलावा और कुछ नहीं है. सभी तरफ घास के मैदान हैं.

"यह महान मैदान हैं," मिस रैन्डोल्फ ने कहा. वो अपने साथ एक एटलस लाई थीं. वो इलाका उन्होंने एटलस पर दिखाया. मिस रैन्डोल्फ ने अन्य अनाथ बच्चों के साथ यह यात्रा पहले कई बार की थी. उसके बाद उन्होंने हमसे नए कपड़े पहनने को कहा.

उसके कुछ ही देर बाद हमें आवाज़ आई: "पोर्टविल्ले, इलेनॉइस!" यह हमारा पहला स्टॉप है. आयोवा का शहर हमारा आखिरी पड़ाव होगा.

रेलवे प्लेटफार्म पर एक भीड़ हमारा इंतज़ार कर रही थी.

"बाप रे बाप!" जैकरी कम्मिंग्स ने उस भीड़ को देखकर कहा. जैकरी, लिवरपूल, इंग्लैंड से एक नाव पर अपने पिता के साथ न्यू-यॉर्क आया था. पर पिता ने उसे छोड़कर चले गए थे. जैकरी, बड़े मज़ेदार अंदाज़ में चीज़ों को कहता था.

वो मिस रैन्डोल्फ के बिल्कुल पीछे था.

वहां पर एक आदमी था जिसका बड़ा कैमरा तीन पैरों पर टिका था. वहां पर घोड़े और गाड़ियाँ थीं और कुत्ते भूंक रहे थे. मुझे एक निगाह में पता चल गया कि मेरी माँ वहां नहीं थीं. वो शायद पश्चिम में और दूर गईं थीं.

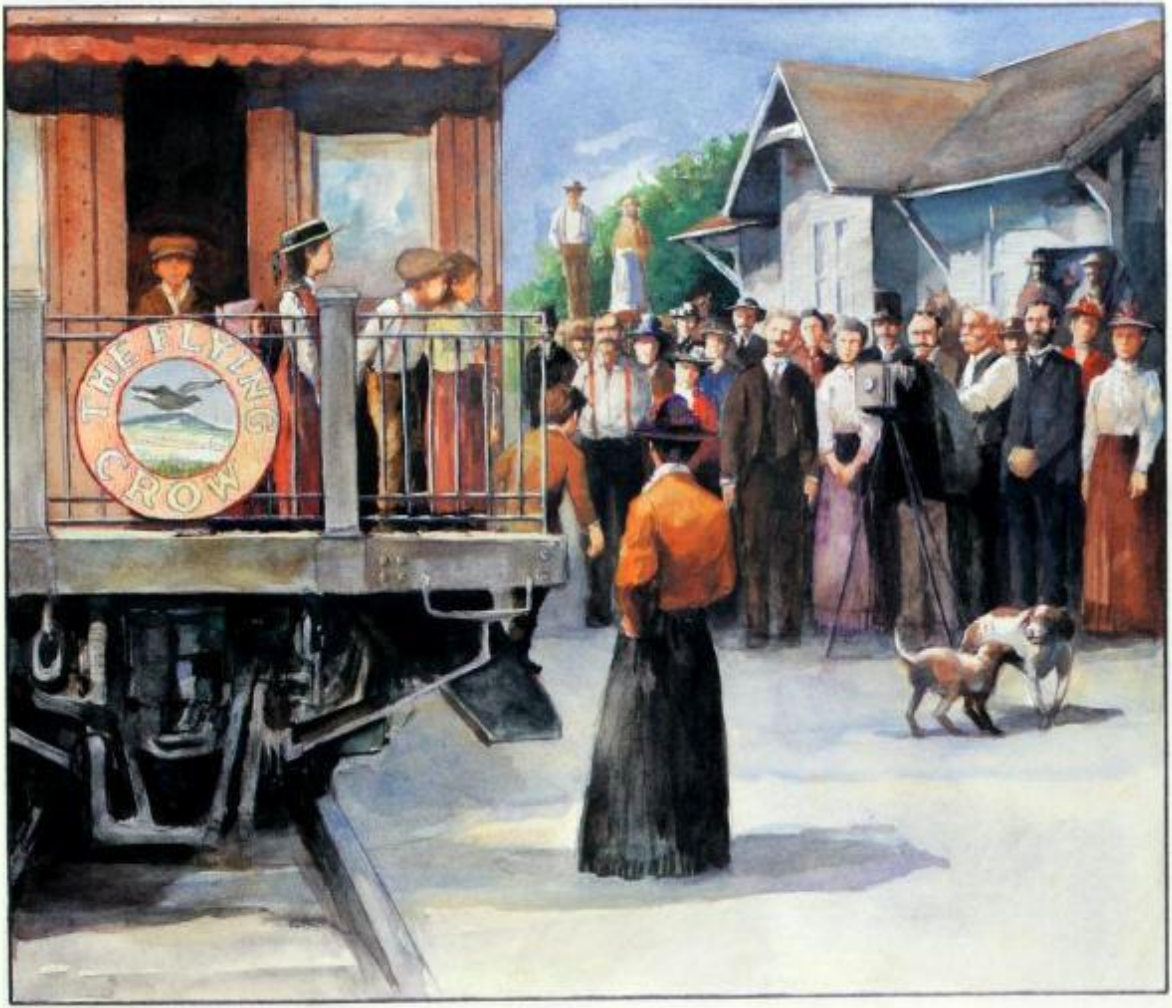
THE FLYING
CROW

वहां से एक आदमी हमें सिटी-हाल में ले गया. सब लोग हमारे पीछे-पीछे एक परेड में आए.

“खुश रहना और मुस्कुराते रहना,” मिस रैन्डोल्फ ने हमसे कहा.

वहां हम लोग स्टेज पर कुर्सियों पर बैठे और शहर के लोग सामने बैठे हमें निहारते रहे. उन्होंने कोट के नीचे लड़कों की मांसपेशियों को महसूस किया. फिर उन्होंने इस प्रकार की बातें कहीं: “यह लड़का अच्छा लगता है.” और, “वो फसल के समय अच्छा काम आएगा.”

जैकरी को दो अन्य बड़े लड़कों के साथ सबसे पहले लोग गोद लिया गया.

“अलविदा दोस्तों,” जैकरी ने हमसे चिल्लाते हुए कहा.

माविस पर्किन्स को एक छोटी महिला ने चुना. माविस ऊंची थी और भारी भी. उसका चेहरा गोल था और गालों में सुन्दर गड्ढे थे.

“डोरोथी!” उस छोटी महिला ने एक और दुबली-पतली औरत को पुकारा. “देखो मुझे क्या मिला. वो घर में मेरी बहुत मदद करेगी. तुम भी अपने लिए ऐसी ही एक लड़की खोजो.”

“माविस एक बहुत ही प्यारी लड़की है,” मिस रैन्डोल्फ ने सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किए. “कृपा उसके साथ अच्छा व्यवहार करें.” उनके होंठ भिंचे हुए थे. “जल्द ही एक एजेंट आपके घर आएगा - बच्चों की सुरक्षा और खुशहाली सुनिश्चित करने के लिए.”

“मिस, आपको लगता है कि मैं उसके साथ अच्छा सुलूक नहीं करूंगी? क्या यह आपके कहने का मतलब है?” फिर वो औरत मिस रैन्डोल्फ को घूरती है. “क्या आप चाहती हैं कि मैं उसे वापिस कर दूं?”

मिस रैन्डोल्फ ने उत्तर में कुछ नहीं कहा. उन्होंने लोगों को सहमति-पत्र पकड़ाए. उसके बाद वो दुबली-पतली महिला माविस को अपने साथ ले गई.

एक औरत और आदमी ठीक हमारे सामने आकर रुके.

उन्हें देख मेरे घुटने कांपने लगे.

वो औरत फर का एक मुलायम मफलर पहने थी. आदमी के हाथ में एक छड़ी थी जिसका मूठ सोने का बना था.

"देखो हर्बर्ट, यह लड़की कितनी प्यारी है!" महिला नोरा को देखकर मुस्कुराई. "हर्बर्ट क्या हम उस लड़की को गोद ले लें? तुम्हारा क्या कहना है?"

"यह मेरी बहन है," नोरा ने मेरा हाथ पकड़ा और फुसफुसाई. "अगर आप मुझे लेते हैं, तो कृपाकर उसे भी लें?"

"अरे वाह!" महिला ने मिस रैन्डोल्फ की ओर देखा. "यह संभव नहीं होगा. हमें तो सिर्फ एक ही लड़की चाहिए."

"ठीक है. और वो दोनों लड़कियां बहनें नहीं हैं, सिर्फ मित्र हैं," मिस रैन्डोल्फ ने जल्दी से कहा. "जल्दी उठो नोरा और मारिआन की मदद करो."

मुझे नोरा के हाथ से अपनी उँगलियां छुड़ाना पड़ीं.

"क्या तुम्हें पता है कि बाहर खड़ी गाड़ी में तुम्हारा कौन इंतज़ार कर रहा है? एक छोटा पिल्ला, सिर्फ तुम्हारे लिए."

"मुझे पिल्ला नहीं चाहिए. मुझे मारिआन चाहिए," नोरा ने रोते हुए कहा.

मिस रैन्डोल्फ और उस दंपत्ति ने सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर किया. फिर वे नोरा को अपने साथ ले गए.

नोरा अभी भी रो रही थी और पीछे मुड़-मुड़ कर देख रही थी.

मुझे भी रोना आ रहा था.

अच्छा हो अगर कोई मुझे न ले. मुझे अपनी माँ के लिए मुक्त रहना है. उन्होंने कहा था कि वो मुझे लेने आएँगी. जिस दिन वो मुझे सेंट क्रिस्टोफर में छोड़ कर गई थीं, उस दिन उन्होंने घुटनों के बल बैठकर मुझसे यह कहा था. तब वो गेरिसन की चिकन फैक्ट्री में काम करती थीं और उनके बालों पर मुर्गी का एक सफ़ेद पंख चिपका था.

मैंने उस पंख को उठाया और अपने गालों से लगाया.

"मैं अब पश्चिम की ओर एक नई ज़िन्दगी शुरू करने जा रही हूँ," उन्होंने मुझसे कहा. "बाद में मैं तुम्हें लेने आऊंगी."

"कब, माँ? कब?" मेरी आँखों से आंसू बह रहे थे और वो पंख मेरे चेहरे पर चिपक गया था.

"क्रिसमस से पहले," माँ ने कहा था.

मैंने कई क्रिसमस, माँ का इंतज़ार किया.

अब मैं भी पश्चिम की ओर जा रही हूँ.

अब हम नौ लोग बचे थे और ट्रेन में वापिस जा रहे थे. मिस रैन्डोल्फ ने कहा कि हमें अपने अच्छे कपड़े पहने ही रहें. हम जल्द ही ट्रेन से दुबारा उतरेंगे.

किल्बर्न स्टेशन पर हम पैदल चलकर एक हार्डवेयर स्टोर गए और वहां एक लाइन में खड़े हुए.

"मुझे लगता है कि सारे अच्छे लड़कों को उन्होंने पोर्ट्सविल्ले में ही गोद ले लिया," एक आदमी ने कहा. "चलो कोई बात नहीं...."

एड्डी हर्ट्ज़ जो अभी सिर्फ सात साल का था, को किसी ने गोद लिया. एक लड़का था जो अपने हाथों के बल खड़ा होकर लोगों के कानों से बटन निकालने का नाटक करता था. उसे देखकर भीड़ हंसी. उसे भी किसी ने गोद लिया.

मिस रैन्डोल्फ ने अपने आंसू पोंछे. "न्यू-यॉर्क की सड़कों पर रहने से कुछ भी अच्छा होगा," उन्होंने कहा. "तुम में से ज़्यादातर लोग अपने नए घरों में खुश रहोगे."

"हम लोग सड़क पर नहीं थे," सूसन अयेर्स ने कहा. सूसन सिर्फ पांच साल की थी, नोरा के बराबर, पर वो तेज़ और चंचल थी. वो भी सेंट क्रिस्टोफर में थी.

"हम लोग हमेशा के लिए तुम्हारी मदद नहीं कर सकते," मिस रैन्डोल्फ ने रुमाल में नाक सिनकते हुए कहा. "हमें बहुत से अन्य अनाथ बच्चों के लिए जगह बनानी है."

सूसन ने यह सुनकर अपना मुहं बनाया.

J.H. ROSEN

अगला स्टेशन ग्लोवर है. वहां कम भीड़ है. मेरी माँ वहां नहीं हैं. वो कहाँ हैं? उन्हें पता होना चाहिए कि मैं उस ट्रेन से आऊंगी. मिस रैन्डोल्फ के अनुसार इस यात्रा का वर्णन सभी अखबारों में छपा था. "सेंट क्रिस्टोफर के अनाथ बच्चे ट्रेन में सवार." "बच्चे जिन्हें घरों की ज़रुरत है." अखबारों ने हरेक स्टेशन का उल्लेख भी किया था. मुझे लगा कि मेरी माँ किसी स्टेशन पर मुझसे आकर ज़रूर मिलेंगी.

माँ रुको! मैं आ रही हूँ! सेंट क्रिस्टोफर में हर रात मैं अँधेरे में अपने सपने माँ को भेजती थी. *तुम्हें अब मुझे लेने के लिए भी नहीं आना होगा. मैं खुद तुम्हारे पास आ रही हूँ.* पर वो कहाँ हैं?

ग्लोवर में हमें रेल लाइन की सीध में ही खड़ा किया गया.

सूसन अभी भी कोई शिकायत कर रही थी. उसका नया जूता चुभ रहा था.

भीड़ में आगे एक अच्छा लगने वाला आदमी और महिला है.

सूसन ने अब मुंह बनाना बंद किया. वो अब मुस्कुराई और उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए.

"मामा! पापा!" वो चिल्लाई.

महिला ने अपने ह्रदय को छूते हुए कहा, "जेम्स, देखो वो हमें बुला रही है."

आदमी ने तुरंत सूसन को अपनी गोद में ले लिया. "हम इसे गोद लेंगे," उसने कहा.

"क्या आप मेरे लिए एक पिल्ला लायेंगे?" सूसन ने पूछा.

"ज़रूर!" आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा.

एक लड़का, जिसका चश्मा एक डोर से बंधा था उसको भी किसी ने गोद लिया. दो अन्य लड़कों को भी लोगों ने गोद लिया.

"अब चुनने के लिए बचा ही क्या है," एक महिला ने गुस्से में कहा. "अगली बार में सबसे पहले स्टेशन - पोर्ट्सविल्ले जाऊंगी."

मेरे मन में एक अजीब तरह का दुःख है. मेरी माँ मुझे नहीं चाहती थीं. अब ऐसा लगता है जैसे कोई भी मुझे नहीं चाहता है. हो सकता है कोई मुझे गोद ले ले? हो सकता है कि अगले स्टॉप पर मेरी माँ मुझे मिल जाएँ? पर अगर वो वहां नहीं हुईं, फिर क्या?

हम में से जो तीन बचे थे वे मिस रैन्डोल्फ के साथ ट्रेन में वापिस गए. उन्होंने ग्लोवर में कुछ बिस्कुट और दूध खरीदा था. दूध मीठा था.

"इतना दुखी होने की क्या ज़रुरत है बच्चों," उन्होंने कहा. "चलो, मिलकर गाएं." फिर उन्होंने एक धार्मिक गीत गाना शुरू किया. पर कोई भी बच्चा उसमें शामिल नहीं हुआ. उन्होंने अकेले ही गीत के तीन छंद गाए.

अब हम नोरा से बहुत दूर जा चुके थे. क्या उसके पिल्ले का कोई नाम था? अगर कोई मुझे गोद लेगा, तो मैं उनसे नोरा से कभी-कभी मिलने जाने को कहूँगी. "वो मेरी बहन जैसी है," मैं उनसे कहूँगी.

"मेमोरियल," कंडक्टर ने अगले स्टेशन का नाम पुकारा. चार लोग उस स्टेशन पर हमारा इंतज़ार कर रहे थे. उनमें मेरी माँ नहीं थी. मैं, एमी और डोरोथी नाम की दो अन्य लड़कियों के साथ नीचे उतरी. हमने एक-दूसरे को देखा. हममें से कौन ज्यादा सुन्दर था? हमने अचरज किया. वे भी मेरे जैसी ही थीं. मीठा दूध पीकर मुझे उल्टी जैसी आ रही थी.

एक दंपत्ति ने एमी और डोरोथी दोनों को, गोद लिया. "एक की कीमत में दो," उस आदमी ने मज़ाक में कहा. वैसे बच्चों की कोई कीमत नहीं थी.

"मारिआन, बच्चों के साथ बहुत अच्छी है," मिस रैन्डोल्फ ने दूसरे दंपत्ति से कहा. उनकी आवाज़ भीख मांगने जैसी थी. अब उनके हाथ में सिर्फ एक फॉर्म बचा था, और वो मेरा था.

"पत्नी मेरी छोटी बेटी की देखभाल करती है," उस आदमी ने कहा.

"हम तो सिर्फ देखने आए थे," उस महिला ने कहा. "पर..." फिर उसने अपने बैग में से एक सेब निकाल कर मुझे दिया. "इसी खा लो बेटा."

"धन्यवाद," मैंने सेब पर अपना मुंह झुकाते हुए कहा. मेरे आंसू बहने लगे.

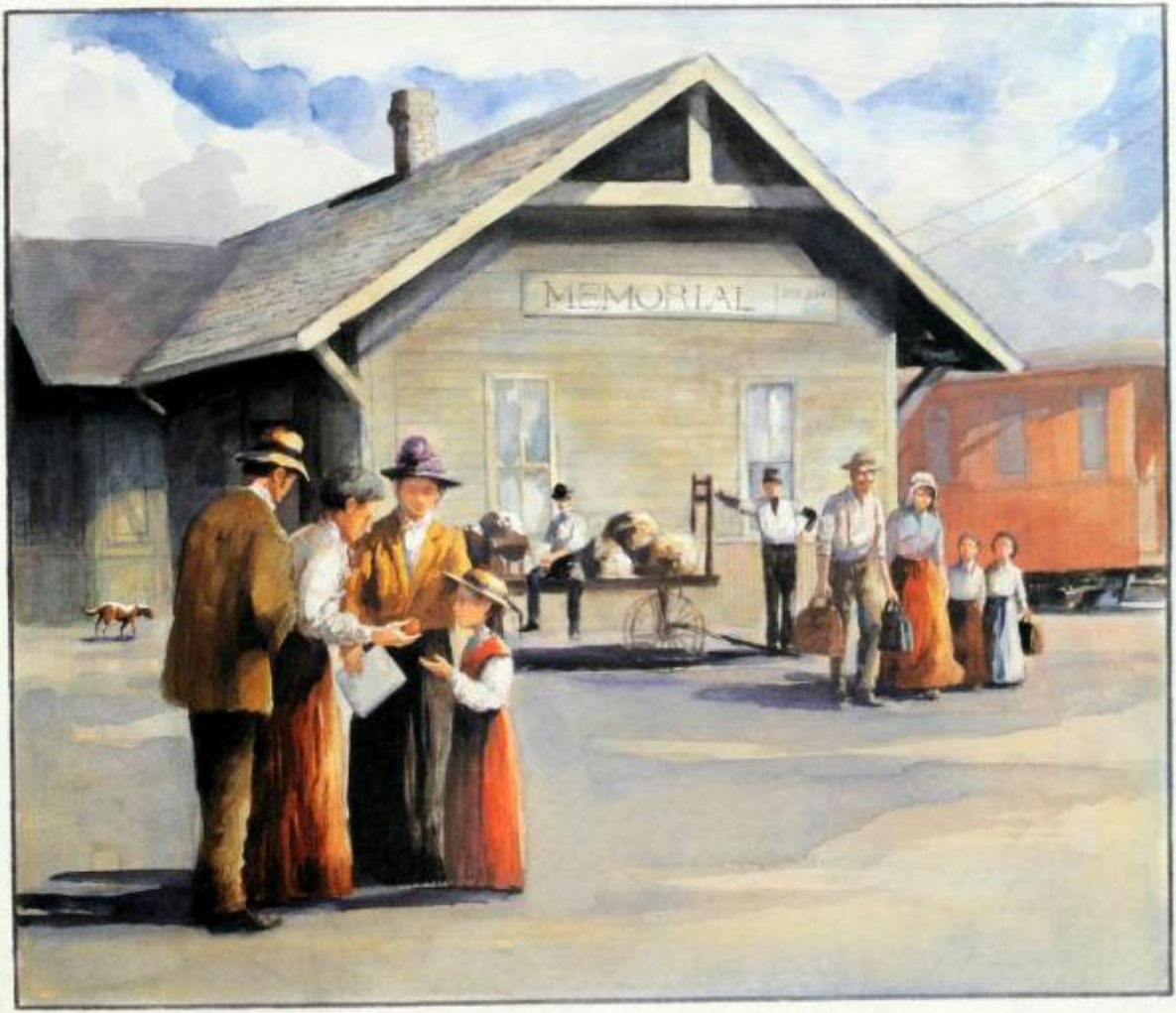
MEMORIAL

ट्रेन की सीटी बजी.

मिस रैन्डोल्फ और मैं ट्रेन में चढ़ी. मुझे पता है कि अब सिर्फ एक ही स्टॉप बाकी है. केवल एक.

मिस रैन्डोल्फ ने मुझ से सेब खाने को कहा. अगर मेरे हाथ गंदे हुए तो उनके पास साफ़ करने के लिए एक छोटी तौलिया थी. पर मेरा अभी कुछ भी खाने को मन नहीं कर रहा था.

फिर हम दोनों ने काफी देर तक खिड़की के बाहर देखा – न बातें कीं, न गाना गया. मिस रैन्डोल्फ ने मेरी हैट हटाई और मेरे बालों को संवारा.

"इसी लाइन पर आगे एक अच्छा होटल है," उन्होंने कहा. "अगर अगले स्टॉप पर कोई नहीं होगा तो फिर हम आगे जायेंगे और यह मुझे अच्छा लगेगा. और फिर हम वापसी की यात्रा करेंगे."

उसके बाद कंडक्टर के जिस स्टेशन का नाम बताया वो एक अजीब और मुश्किल नाम था. जैसे स्टेशन खुद को बहुत महत्वपूर्ण समझता हो.

मैं अपनी हैट वापिस पहनी. मेरे हाथ कांपने लगे.

बाहर एक दंपत्ति अपनी गाड़ी के पास इंतज़ार कर रहा था. वो महिला छोटी थी और किसी गुलगुले जैसी गोल-मटोल थी. वो एक भारी काली ड्रेस पहने थी और एक आदमी की हैट पहने थी. वो मेरी माँ नहीं थी.

"क्या तुम तैयार हो मारिआन," मिस रैन्डोल्फ ने हल्के से पूछा.

मैं एक सीट पर पीछे खिसक कर बैठ गई. "नहीं," मैं फुसफुसाई, "नहीं."

ट्रेन से नीचे उतरते हुए मिस रैन्डोल्फ ने मेरा हाथ पकड़ा.

वो आदमी ऊंचा था और उसकी पीठ झुकी थी. उसने सत्कार में अपनी हैट उठाई.

महिला ने अपनी हैट नहीं उतारी.

मुझे वो दोनों काफी बूढ़े लगे. वो महिला अपने हाथ में एक लकड़ी का रेल-इंजन पकड़े थी.

“क्या आप.....?” उस आदमी ने मिस रैन्डोल्फ से पूछा.

“हाँ.” मिस रैन्डोल्फ ने मुझे आगे करते हुए कहा. “यह मारिआन है.”

“क्या सिर्फ यह ...” कहकर महिला रुकी. मुझे लगा वो कहेगी: “क्या सिर्फ यह ही बची है?” पर उसने ऐसा कुछ नहीं कहा. फिर उसने मुझे गौर से देखा जिसके बाद उसका चेहरा बदला. उसका चेहरा नर्म पड़ा. मुझे लगा कि मेरी माँ भी बिल्कुल उसी तरह मुझे देखती.

ऐसा लगा जैसे वो महिला मुझे समझी हो, क्योंकि अभी तक किसी भी परिवार ने मुझे पसंद नहीं किया था. इस लम्बी यात्रा में मैं लगातार अपनी माँ के आने का इंतज़ार कर रही थी. शायद उस महिला को मेरा दुःख-दर्द समझ में आया हो.

“मेरा नाम टिली बुक है,” उसने मिस रैन्डोल्फ से कहा. “और यह मेरे पति हैं – रोस्कोए.” फिर महिला ने मुझे वो लकड़ी का रेल-इंजन दिया. “यह हमने तुम्हारे लिए खरीदा था.”

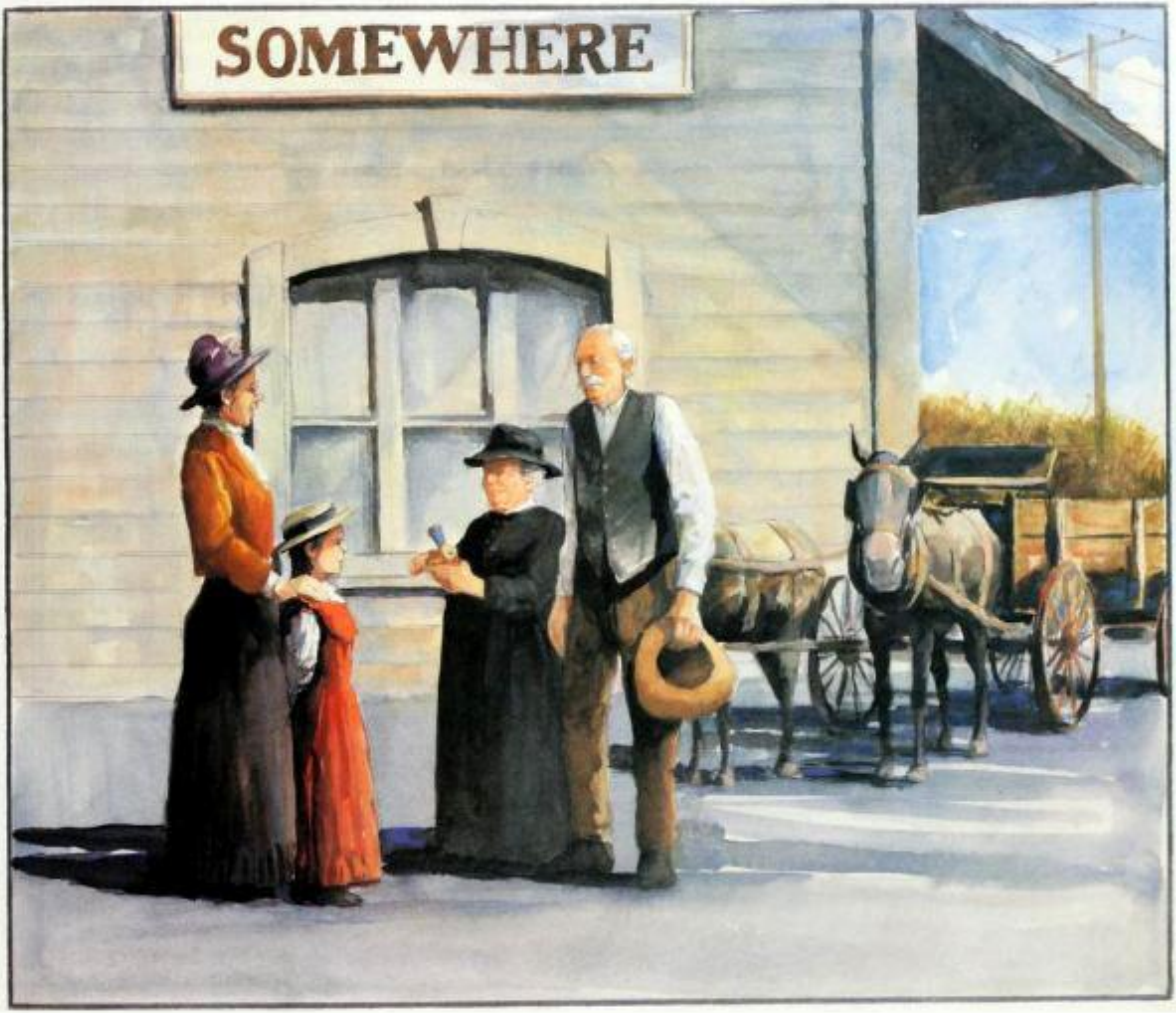
SOMEWHERE

"क्या मैं वैसी नहीं हूँ, जिसकी आपको तलाश थी?" मैंने पूछा. "आपको शायद एक लड़के की तलाश थी." रेले-इंजन के पहिए लाल रंग के थे और उसकी चिमनी नीली थी.

"मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगी. हाँ, हमें एक लड़का चाहिए था," मिसेस बुक ने कहा.

"पर हमें लड़कियां भी बहुत पसंद हैं," मिस्टर बुक ने कहा.

उसके बाद मिसेस बुक ने मुझे देखकर कहा. "मुझे लगता है कि हम भी वो नहीं हैं जिसकी तुम्हें तलाश थी. रोस्कोए और मैं, जब हम एक-दूसरे से मिले तो हमारी उम्र काफी हो चुकी थी. मुझे लगता था कि मुझे ज़िन्दगी में कोई बेहतर और अधिक सुन्दर आदमी मिलेगा." फिर उन्होंने मिस्टर बुक के हाथ को थपथपाया और फिर दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराये. उन्हें देखकर लगा कि वो एक-दूसरे को बहुत चाहते थे. "कभी-कभी तुम्हें जो मिलता है वो तुम्हारी अपेक्षा से बेहतर निकलता है," मिसेस बुक ने कहा.

"हाँ." मेरे अन्दर एक हलचल पैदा हुई. मेरी माँ यहाँ नहीं हैं. वो न यहाँ न कहीं और मेरा इंतज़ार कर रही होंगी. फिर मैंने अपनी जेब में हाथ डालकर वो सफ़ेद पंख निकाला. जब मैंने उसे अपनी माँ के बालों में से निकाला था तब पंख सफ़ेद था. पर अब वो पीला हो चला था. मैंने उसे अपनी उँगलियों से सीधा किया. "यह मैं आपके लिए लाई हूँ."

"तुम्हारा बहुत शुक्रिया." फिर मिसेस बुक ने उस पंख को अपनी हैट में लगा लिया. ऐसा लगा जैसे उस पंख का वही सही स्थान हो, और अंत में उसे अपनी सही जगह मिली हो.

मिस्टर बुक ने सहमति-पत्र लिए, उनको देखा और फिर मुझे देखा. "क्या तुम हमारा साथ आओगी?"

"हाँ," मैंने धीमी आवाज़ में कहा.

मिस रैन्डोल्फ ने आगे बढ़कर मेरे गालों पर पुच्ची दी.
“क्या तुम अब तैयार हो, मारिआन?” उन्होंने मुझ से पूछा.
“हाँ, मैं तैयार हूँ.”

जेफ़र्सन कप अवार्ड बुक

ALA बुक-लिस्ट एडिटर्स चॉइस

अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन नोटेबल बुक